ट्रैक्टरों की आवश्यकता

1595. श्री यशवन्त सिंह कुशवाह :
श्री चं० चु० देसाई :
श्री देवकीनंदन पाटोदिया :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) गत वर्ष भारत में विदेशों से कितने ट्रैक्टर, देशवार, मंगवाये गये;

(ख) भारत में ट्रैक्टरों की आवश्यकता को पूरा करने के लिये देश में प्रतिवर्ष कितने ट्रैक्टर बनाने की आवश्यकता है; और

(ग) आत्मनिर्भर होने के लिए देश में ट्रैक्टरों का निर्माण करने के लिए क्या कार्यवाही की गई है ?

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री अन्नासाहिब शिन्दे) : (क) जानकारी इकट्ठी की जा रही है और मिलते ही सभा पटल पर रख दी जायेगी ।

(ख) चौथी योजना के शेष 4 वर्षों में कृषि हेतु ट्रैक्टरों की आवश्यकता निम्न प्रकार है :—

	ट्रैक्टर
1967–68 . .	25,000
1968–69 . .	30,000
1969–70 . .	35,000
1970–71 . .	40,000

(ग) प्रतिवर्ष 30,000 ट्रैक्टरों के निर्माण के लिए लाइसेन्स दिये गये हैं । ट्रैक्टर उद्योग को 'प्रायरिटी इन्डस्ट्री' की सूची में रखा गया है ताकि वर्तमान विनिर्माता अधिक से अधिक उत्पादन बढ़ा सकें और इस उद्योग को उसकी वर्तमान विनिर्माण क्षमता के अनुसार पूरी विदेशी मुद्रा दी जाती है । एक सरकारी क्षेत्र परियोजना की स्थापना के विषय में विचार हो रहा है । इस परियोजना के अन्तर्गत वर्ष भर में 12,000 ट्रैक्टर तैयार होंगे ।

Delhi-Shivpuri National Park Air Service

1596. **Shri Y. S. Kushwah:** Will the Minister of **Tourism and Civil Aviation** be pleased to state:

(a) whether any request has been received by the Central Government from the Government of Madhya Pradesh for the introduction of a bi-weekly air service from Delhi to Shivpuri National Park *via* Gwalior for the promotion of tourist traffic; and

(b) if so, the decision taken in this matter?

The Minister of Tourism and Civil Aviation (Dr. Karan Singh): (a) and (b). No request has been received from the Government of Madhya Pradesh for introduction of a bi-weekly air service from Delhi to Shivpuri National Park, *via* Gwalior. A proposal from the State Government has, however, been received for operation of an air service for Kahna National Park *via* Jabalpur, and a survey of traffic potential is being carried out by the I.A.C. in this regard.

Damage to Crops

1598. **Shri Vishwa Nath Pandey:** Will the Minister of **Food and Agriculture** be pleased to state:

(a) whether it is a fact that heavy and untimely rains have caused extensive damage to crops all over Northern India in March and April, 1967; and

(b) if so, the total loss due to such heavy and untimely rains to crops?

The Minister of State in the Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Cooperation (Shri Annasahib Shinde): (a) It is not correct to say that all over Northern India there was heavy damage caused

in March and April, 1967 due to heavy and untimely rains. Reports of partial damage have come only from Punjab, Rapasthan and Uttar Pradesh Governments.

(b) According to the reports of the State Governments concerned, their losses have been estimated by them as *follows:*

Punjab: Estimated total value of loss Rs. 69,29,817.

Rajasthan: Estimated crop damage in quantity 1,50,000 tonnes.

U.P.: Damage by hail-storms estimated over 2,64,141 acres during the period March 13 and March 20 and 11,84,834 acres during the period March 22 and March 31, 1967.

संकर तिलहन का उत्पादन

1599. श्री महाराज सिंह भारती : क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने संकर बाजरा तथा संकर मकई की भांति संकर तिलहन उगाने का कोई प्रयत्न किया है;

(ख) यदि हां, तो उसके क्या परिणाम रहे;

(ग) क्या अधिक पैदावार वाले किसी तिलहन की खोज की गई है;

(घ) क्या सरकार ने सोयाबीन "सूरजमुखी" आदि विदेशी तिलहन जो साधारणत: यहां नहीं उगाये जाते हैं, भारत में उगाने के प्रयोग किये हैं, और

(ङ) यदि हां, तो इन प्रयोगों के क्या परिणाम रहे ?

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अण्णासाहिब शिन्दे) : (क) जी हां। प्रयोगात्मक आधार पर यह तिल के मामले में किया जा रहा है।

(ख) मुख्य तिलहन फसलों में संकर बीजों के कम खर्चीले बड़े पैमाने के उत्पादन की दृष्टि में रखते हुए तिलों की स्थिति संतोषजनक है यह बात संकर-शक्ति की उपयोगिता के लिए महत्वपूर्ण है।

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद तथा भतपूर्व भारतीय केन्द्रीय तिलहन समिति के माध्यम से केन्द्रीय सरकार ने 1958 से मद्रास, उत्तर प्रदेश तथा मैसूर राज्यों में संकर तिल के विकास के लिए अनुसन्धान परियोजनाएं संचालित की हैं। इसके अतिरिक्त कृषि विभाग, भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्था जैसी केन्द्रीय संस्था भी इस कार्य में लगी हुई है। इन अनुसन्धान गतिविधियों के फलस्वरूप उन्नत हाइब्रिडस का विकास हुआ है। उदाहरण के लिए मद्रास में स्थानीय उन्नत किस्मों तथा रूसी किस्मों के बीच हाइब्रिडस ने मूल की अपेक्षा 14 से 29 प्रतिशत अधिक उपज दी है। 1000 से 1300 कि० ग्राम प्रति हैक्टेयर के बीच उपज हुई है।

इसी प्रकार उत्तर प्रदेश में हाइब्रिड सम्मिश्रण जिससे 1400 से 2000 कि० ग्राम प्रति हैक्टेयर उपज होती है का विकास हुआ है। संकर बीजों के बड़े पैमाने के उत्पादन को सरल बनाने के लिए पौद किस्मों को जो 100 प्रतिशत "पिस्टीलेट" (समस्त मादा पुष्प) हैं हैदराबाद में भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्था के प्रादेशिक अनुसन्धान केन्द्र द्वारा तथा अन्य राजकीय विभागीय प्रयोगशालाओं द्वारा विकसित किया गया है। इस खोज से संकर बीजों का सस्ता उत्पादन सम्भव हो सकता है और ऐसी आशा है कि बड़े पैमाने पर संकर तिलों की खेती करना भविष्य में सम्भाव्य होगा। लिनसीड में संकर बीजों के उत्पादन सम्बन्धी अनुसन्धान भी किए जा रहे हैं।

सरसों के बीजों के मामले में संयोगात्मक किस्मों का भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्था